।। श्री शिव जी की आरती ।।

ॐ जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, अर्द्धांगी धारा ॥ ॐ जय शिव...॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजे, स्वामी पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन, हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥ ॐ जय शिव...॥
दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज अति सोहे, स्वामी दस भुज अति सोहे।
तीनो रूप निरखता, तीनो रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे ॥ ॐ जय शिव...॥
अक्षमाला बनमाला रुण्डमाला धारी, स्वामी रुण्डमाला धारी।
चंदन मृगमद सोहै, चंदन मृगमद सोहै, भाले शशिधारी ॥ ॐ जय शिव...॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे, स्वामी बाघम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक, सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ॥ ॐ जय शिव...॥
कर के मध्य कमण्डलु चक्र त्रिशूल धर्ता, स्वामी चक्र त्रिशूल धर्ता।
जगकर्ता जगभर्ता, जगकर्ता जगभर्ता जगसंहारकर्ता ॥ ॐ जय शिव...॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका, स्वामी जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्य, प्रणवाक्षर के मध्य ये तीनों एका ॥ ॐ जय शिव...॥
त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई नर गावे, स्वामी जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, कहत शिवानंद स्वामी मनवांछित फल पावे ॥ ॐ जय शिव...॥
जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धांगी धारा ॥ ॐ जय शिव ओंकारा...॥
ॐ जय शिव ओंकारा...॥ ॐ जय शिव ओंकारा...॥